Baba’s Praise

27/2/2015

- बाप पहले-पहले तो **ज्ञान का सागर** है।
- बरोबर यह **गॉड फादरली युनिवर्सिटी** है, यहाँ **भगवान पढ़ाते** हैं। इससे बड़ी युनिवर्सिटी और कोई हो न सके।
- **ऊंच ते ऊंच शिवबाबा** को कोई भी नहीं जानते हैं। इस समय तुम बच्चे सबकी बायोग्राफी को जानते हो।

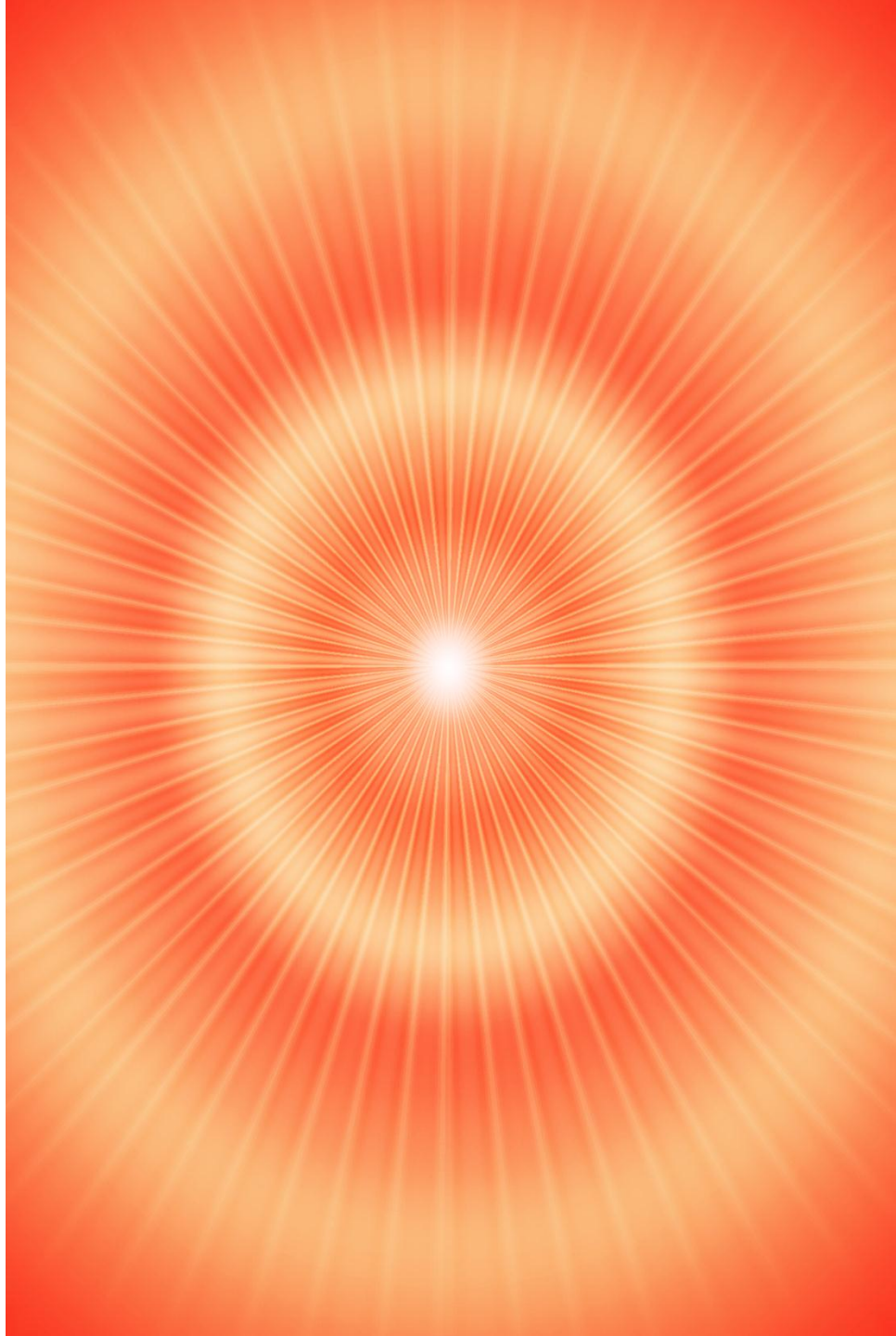

- **ऊंच ते ऊंच है भगवान**। शिवरात्रि भी मनाते हैं तो जरूर उनका अवतरण हुआ है परन्तु कब हुआ, उसने क्या आकर किया-यह किसको भी पता नहीं है।

- बाप कहते हैं मुझे याद करो और वर्से को याद करो फिर **ज्ञान का सागर** भी गाया हुआ है। कितनी **अथाह पाइंट्स सुनाते** हैं। इतनी सब पाइंट्स तो याद रह न सकें। तन्त (सार) बुद्धि में रह जाता है।

- ज्ञान का सागर कृष्ण को नहीं कहेंगे। वह है रचना। **रचता एक ही बाप** है। बाप ही **सबको वर्सा देंगे, घर ले जायेंगे**।

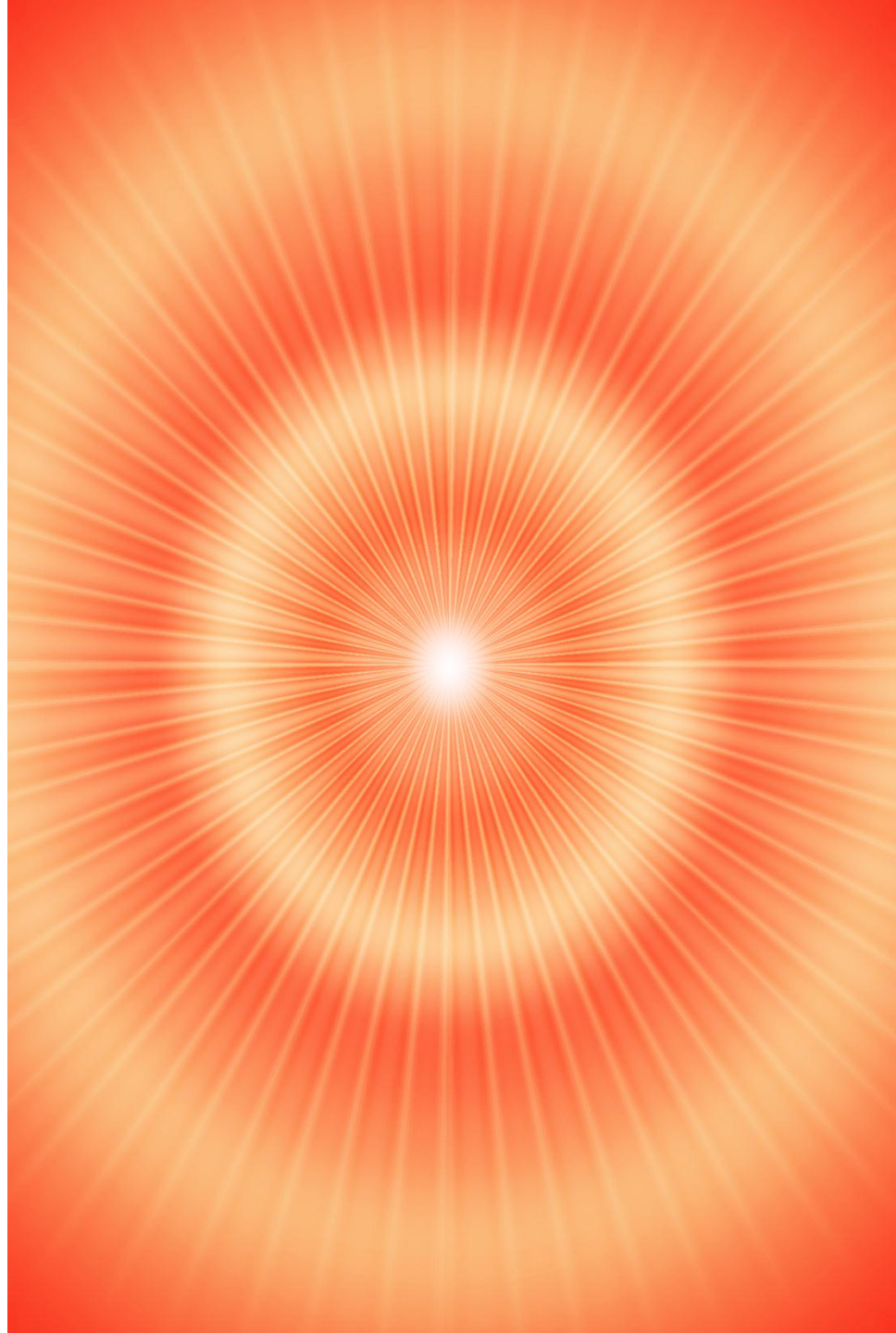

- तुमको तो यह बाप **अविनाशी कमाई कराते** हैं- भविष्य के लिए। बाकी जो भी गुरु-गोसाई आदि हैं वह सब विनाशी कमाई कराते हैं।

- बाप **ऊंच पद प्राप्त कराने** आये हैं तो पुरूषार्थ करना चाहिए ना। परन्तु तकदीर में नहीं है तो श्रीमत भी नहीं मानते, फिर पद भ्रष्ट हो जाता है।

- बाप कहते हैं हम तुमको **राजयोग सिखलाने** आया हूँ।

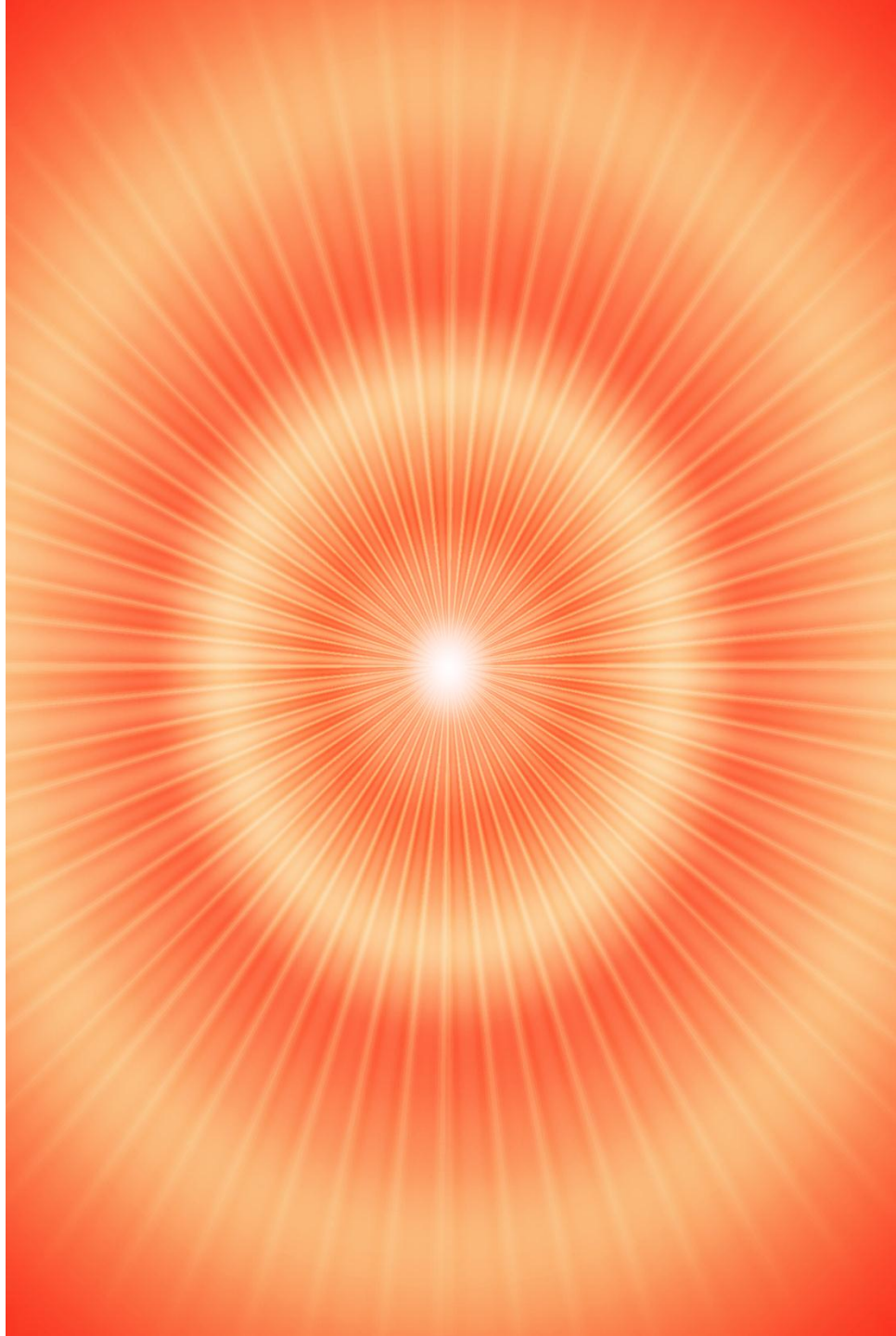

- भगवान को **खुद आकर पढ़ाना पड़ता** है। ऐसे और कोई कह न सके कि देह के सब सम्बन्ध छोड़ मेरा बनो, अपने को निराकार आत्मा समझो। कोई भी चीज का भान न रहे।